✺ 14 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] जो भी आत्मायें मेरे घर में आती हैं, वह अपने-अपने सेक्शन में अपने नम्बर पर फिक्स होती हैं। वह कभी भी हिलती डुलती नहीं। वहाँ पर सभी धर्म की आत्मायें मेरे नज़दीक रहती हैं। वहाँ से नम्बरवार अपने-अपने समय पर पार्ट बजाने आती हैं वह वन्डरफुल नॉलेज इसी समय कल्प में एक बार ही तुम्हें मिलती है। दूसरा कोई यह नॉलेज नहीं दे सकता।

2] तुम्हारी बुद्धि में है कि हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। आत्मा जब शरीर में है तो जीवात्मा है, तो दोनों इकट्ठे सुख अथवा दु:ख भोगते हैं। ऐसे बहुत लोग समझते हैं कि आत्मा ही परमात्मा है, वह कभी दु:ख नहीं भोगती, निर्लेप है। बहुत बच्चे इस बात में भी मूंझते हैं कि हम अपने को आत्मा निश्चय तो करें। लेकिन बाप का कहाँ याद करें? यह तो जानते हो बाप परमधाम निवासी है।

3] अभी तुम जानते हो हम आत्मा है। आई माना आत्मा, माई माना मेरा यह शरीर है। मनुष्य यह नहीं जानते। उन्हों का तो सदैव दैहिक सम्बन्ध रहता है। सतयुग में भी दैहिक सम्बन्ध होगा। परन्तु वहाँ तुम आत्म-अभिमानी रहते हो। यह पता पड़ता है कि हम आत्मा हैं, यह हमारा शरीर अब वृद्ध हुआ है, इसलिए हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। इसमें मूंझने की भी कोई बात नहीं है।

4] मनुष्य जब तक ज्ञान को पूरा नहीं समझते हैं तब तक अनेक प्रश्न पूछते हैं। ज्ञान है तुम ब्राह्मणों को। तुम ब्राह्मणों का वास्तव में मन्दिर भी अजमेर में है। एक होते हैं पुष्करणी ब्राह्मण, दूसरे सारसिद्ध। अजमेर में ब्रह्मा का मन्दिर देखते जाते हैं। ब्रह्मा बैठा है, दाढ़ी आदि दी हुई है। उनको मनुष्य के रूप में दिखाया है। तुम ब्राह्मण भी मनुष्य के रूप में हो। ब्राह्मणों को देवता नहीं कहा जाता है। सच्चे-सच्चे ब्राह्मण तुम हो ब्रह्मा की औलाद। वह कोई ब्रह्मा की औलाद नहीं हैं, पीछे आने वालों को यह मालूम नहीं पड़ता हैं।

5] ब्रह्मचारी वह है जिसके हर संकल्प, हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ है।

✺ योग-

1] बाप ने अपना परिचय दिया हुआ है। कहाँ भी चलते-फिरते बाप को याद करो।

2] बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझो और फिर मुझे याद करो।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम सब आपस में रूहानी भाई-भाई हो, तुम्हारा रूहानी प्यार होना चाहिए, आत्मा का प्यार आत्मा से हो, जिस्म से नहीं।

2] हम आत्मा हैं, बाप के बच्चे हैं, यह यथार्थ रीति समझकर, यह निश्चय पक्का-पक्का होना चाहिए।

3] बाप को जानना है, स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। बस !

✺ सेवा-

1] .....यह सारी नॉलेज है जो तुम कोई को अच्छी रीति समझा सकते हो।

2] एक सेकण्ड वा एक मिनट भी अगर इस स्थिति में एकाग्र हो स्थित हो जाओ तो स्वयं को और अन्य आत्माओं को बहुत लाभ दे सकते हो। सिर्फ इसकी प्रैक्टिस चाहिए।